हिन्दी Hindi Class 11 Important Question Chapter 9 कबीर

1. कबीर के पद मुख्यतः किस संबंध में लिखी गई है?

उत्तर: कबीर के पद मुख्यतः हिंदू मुस्लिम के भेदभाव और ईश्वर के प्रति उनकी भक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

2. स्त्री का अपने पति के इंतजार में क्या हाल है?

उत्तर: स्त्री अपने पति के इंतजार में ठीक उसी तरह व्याकुल है जिस तरह एक प्यासा पानी के लिए व्याकुल होता है।

3. भेदभाव की मुख्य वजह क्या है?

उत्तर: भेदभाव की मुख्य वजह अपने धर्म को श्रेष्ठ माना है जिस वजह से सभी धर्मों के मध्य दूरी उत्पन्न होने लग जाती है।

4. धार्मिकता के नाम पर कौन कौन से धर्म आपस में लड़ते हैं?

उत्तर: धार्मिकता के नाम पर हिंदू और मुस्लिम आपस में लड़ते हैं संघर्ष करते हैं और अपने ही धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं।

5. कबीर दास का परमात्मा से प्रेम के संबंध में क्या मत है?

उत्तर: कबीर दास जी एक ही ईश्वर को मानते हैं और उन्हीं की भक्ति में लीन होना वाले व्यक्ति हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विरहिणी स्त्री के रूप में किसको संबोधित कर रहे हैं और क्या आशंका व्यक्त कर रहे हैं?

उत्तर: विरहिणी के रूप में कबीर अपने प्रिय को संबोधित कर रहे हैं। विरहिणी स्त्री की इच्छा है कि उनके प्रिय उनके पास लौट आए इन पंक्तियों में कबीर दास जी ईश्वर और खुदा का आवाहन हुए कहते हैं कि उनको दर्शन दे।

2. प्रेम के संबंध में दोहे के कबीर ने किस पाठ में क्या कहा है?

उत्तर: कबीरदास जी कहते हैं जिस प्रकार एक प्यास है पानी के लिए बहुत व्याकुल होता है और एक काम ही नहीं अपने प्रिय के लिए बहुत व्याकुल होती है ठीक उसी प्रकार मैं भी ईश्वर से बहुत प्रेम करता हूं उनसे मिलने के लिए व्याकुल हो रहा हूं।

3. धर्म मजहब के संबंध में कबीर के क्या विचार हैं?

उत्तर: कबीरदास जी कहते हैं कि धर्म के नाम पर लेना छोड़ दो और आपस में मिल जुल कर रहो क्योंकि ईश्वर एक ही है उन्हें अलग-अलग स्वरूपों में खोजना बंद करो इससे हे मनुष्य तुम और भी ज्यादा भटक जाओगे।

https://www.evidyarthi.in/

4. आडंबर में लोग क्या नहीं पहचान पाएंगे?

उत्तर: कबीरदास जी कहते हैं कि जो मनुष्य मूर्ति ही खोजते हैं असल में भ्रमित होते हैं ऐसे लोग ईश्वर को कभी जान ही नहीं पाते।

5. कबीर एक ईश्वर वादी हैं कैसे?

उत्तर: कबीर दास जी एक ईश्वर वादी हैं क्योंकि वह मूर्ति पूजा रीति रिवाज आडंबर ओं को नहीं मानते और ना ही उन पर विश्वास करते हैं वह कहते हैं कि ईश्वर एक ही हैं लोग उनके अलग-अलग स्वरूपों को पूछते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्मों की उलझन के बारे में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तर: कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य हिंदू मुस्लिम सिख इसाई इत्यादि धर्मों में उलझ गया है। उझे समझ नहीं आता कि कौन सा धर्म उसके लिए सही है और हां वह

धर्म और आडंबर फसकर रह गया है। इसी वजह से वह ईश्वर की तलाश करने में असक्षम रहा।

2. कबीर प्रेम के रूप, रंग और स्वभाव के बारे में क्या कहते हैं?

उत्तर: कबीर दास जी मूर्ति पूजा को नहीं मानते परंतु वह सांसारिक संबंधों को मानते हैं उनके अनुसार प्रेम साकार या निराकार नहीं होता प्रेम तो हो जाता है । प्रेम भावना है जिसकी कोई भाषा नहीं होती। प्रेम रूपी भावना में पड़ गए मनुष्य को आनंद की पूर्ति होती है। अंत में कबीरदास जी कहते हैं कि उन्होंने अपना संपूर्ण प्रेम और स्नेह ही ईश्वर को समर्पित कर दिया है।

3. अरे इन दोहुन राह न पाई से कबीर का आशय है?

उत्तर: प्रस्तुत पंक्तियां कबीर दास जी ने हिंदू और मुस्लिम के लिए बोली है। इन पंक्तियों में कबीरदास जी कहते हैं कि दोनों धर्म अंधविश्वास में उलझे पड़े है और सच्ची भक्ति को पूरी तरह से भूल गए हैं । धर्म के नाम पर अंधविश्वास को और आडंबरों धर्म बना करें चलते हैं।

4. अनेक मजहबों के होते हुए भी कबीर सिर्फ हिंदू और मुस्लिम की बात क्यों करते हैं?

उत्तर: कबीर दास जी ने सिर्फ हिंदू और मुस्लिम की बात इसलिए किए क्योंकि उनके समय में हिंदू और मुस्लिम धर्म है अत्यधिक मात्रा में थे। और यही कारण है कि इन दोनों धर्मों के बीच अत्यधिक लड़ाइयां भी होती थी। इसीलिए कबीर दास जी ने सिर्फ हिंदू और मुस्लिम के ही धर्मों के बारे में बताया है।

5. कबीर ने राह शब्द के माध्यम से जटिल प्रश्न को संबोधित किया है?

उत्तर: कबीर दास जी ने राह शब्द को अलग अलग धर्मों के लिए उपयोग किया है । वह कहते हैं कि भारत जैसे देश में अलग-अलग धर्म में रहते हैं जैसे हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई, बौद्ध, इत्यादि और हर धर्म अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं। मनुष्य की सबसे बड़ी परेशानी है कि पता ही नहीं लगा सकता कि सबसे अच्छा धर्म कौन सा है। यह कहते हैं कि इसीलिए मनुष्य सभी धर्मों के बीच फंसा है और उसे सही राह का अभी तक बोध नहीं है।

https://www.evidyarthi.in/

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास के काव्य सौंदर्य पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: कबीर दास जी ने अपने काव्य में व्यंग को अपनाया है। उनका मानना है कि हिंदू और मुस्लिम अपने अपने धर्म के प्रति बहुत ही अंधविश्वासी हो गए हैं। उनका जो दृष्टिकोण है दोनो धर्मो के प्रति वह बराबर है। उन्होंने अपने काव्य में दोनो धर्मो के मध्य जो भेद भाव है उसे दूर करने को कहा है।

2. हिंदूवाई और तुरकाई से कबीर का आशय है।

उत्तर: हिंदू और मुस्लिम अपने अपने धर्मो को मानते है और यही वजह है उनके लड़ने की। कबीर दास जी कहते है की ऐसा करके को अपना अपना समय और ऊर्जा दोनो को की नष्ट कर रहे है। वह कहते है की जहा एक तरफ हिंदू अपने बर्तन किसी को भी नही देते वही दूसरे ओर मुस्लिम जीव हत्या करते है तो बताए की यह कौन सा धर्म है और ऐसी कौन सी भक्ति है जहा यह सब होता है।

3. कबीर को भोजन अच्छा नहीं लगता ना नींद आती है। क्यों?

उत्तर: कबीरदास जी ईश्वर की भक्ति में इस तरह से दिन हो चुके हैं कि वह प्रभु को अपना सब कुछ मानते हैं। वह ईश्वर को अपने पति मानते हैं तथा खुद को उनकी पत्नी। कबीर दास जी अपने प्रिय से बिछड़ गए हैं इसलिए उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है न भोजन करने की इच्छा है और न ही उन्हें नींद आ रही है।

4. कबीर दास के जीवन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: कबीर दास जी का जन्म सन् १३९८ ई॰ में एक ब्राह्मण विधवा के घर हुआ था समाज के डर से उन्होंने अपने बच्चे को एक तालाब के किनारे छोड़ दिया था वहां से गुजरते वक्त मुस्लिम दंपत्ति नीमा और नीरू ने उस नवजात शिशु को गोद ले लिया और उसका पालन पोषण किया। बड़े होकर वह वाला कवि के नाम से विख्यात हुआ। कबीर दास जी ने आगे चलकर अपने पिता के व्यवसाय को अपनाया कबीर दास जी का विवाह लोई नामक स्त्री से हुआ। कबीरदास जी भक्ति काल के प्रमुख कवियों में से एक है। कबीर दास जी की भक्ति में पूरी तरह से ली थी और इस मार्ग पर चलते हुए उन्होंने धार्मिक आडंबर जैसे व्रत पूजा नमाज इत्यादि का विरोध किया। धर्म जाति के नाम पर होने वाले भेदभाव पर उन्होंने बहुत कड़ा विरोध भी किया। उनकी भाषा को पंचमेल खड़ी कहा जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार ऐसा माना जाता है कि जो मगहर मैं मृत्यु को प्राप्त होता है वह नरक जाता है संत कबीर दास जी ने इसका बहुत विरोध किया और अंत समय में वह मगहर की धरती पर सन् १५१८ ई॰ मे ईश्वर को प्राप्त हो गए। कबीर दास जी उन महान व्यक्तियों में से एक थे इन्होंने अपने ज्ञान से समाज में उत्पन्न कुरीतियों अंधविश्वास का कड़ा सामना किया।

5. इस पाठ में दिए गए कबीर दास के पदों का भावार्थ लिखिए।

उत्तर: कबीर दास जी ने कविता दिए 2 धर्म हिंदू और मुस्लिम के बारे में ही बात करी है। वह कहते हैं कि यह दोनों धर्म अपने अपने मार्ग से भटक गए हैं। यह दोनों धर्म अपने अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं जिस वजह से हर बार इनके बीच से बहुत ही मतभेद होते हैं। कबीरदास जी कहते हैं कि एक ओर जहां हिंदू अपने धर्म को श्रेष्ठ मानता है और मुस्लिम को अपना जल छूने भी नहीं देता वहीं दूसरी ओर मुसलमान जिनकी ईस्ट ही स्वयं मांस का सेवन करते हैं। इन दोनों धर्मों के बीच मतभेद देखकर कबीर दास जी अत्यंत दुखी और निराश होते हैं। एक ओर जहां हिंदू मुस्लिम धर्म को गंदा मानते हैं वहीं दूसरी ओर मुसलमान भी हिंदुओं को काफिर मानते हैं। इस सामाजिक भेदभाव का कबीर दास जी ने विरोध किया।

https://www.evidyarthi.in/